भावनाशील उपेक्षित भारतीय नारी : सलमा

काकानि श्रीकृष्ण*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19501945

ABSTRACT

मोहन राकेश के प्रसिद्ध नाटक 'पैर तले की ज़मीन' में सलमा का चरित्र एक हताश, उपेक्षित और भावनाशील भारतीय नारी का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है। अपने पति अयूब के निरंतर ताने, उपेक्षा और दुर्व्यवहार के बावजूद वह एक पारंपरिक और सहनशील पत्नी की तरह अपने कर्तव्यों का निर्वाह करती है। अयूब का चारित्रिक पतन और सलमा के विवाह-पूर्व प्रेम को लेकर उसका संशय उनके वैवाहिक जीवन को एक 'कब्रिस्तान' में बदल देता है। इसमें सलमा के मानसिक द्वंद्व, उसकी असीम सहनशीलता, पति-धर्म और अंततः एक उपेक्षित स्त्री के रूप में उसकी मार्मिक व विवश स्थिति का मनोवैज्ञानिक और यथार्थपरक विश्लेषण किया गया है।

KEYWORDS: सलमा, पैर तले की ज़मीन, मोहन राकेश, उपेक्षित नारी, वैवाहिक द्वंद्व.

सलमा को पैर तले की ज़मीन नाटक में अयूब की हताश पत्नी के रूप में चित्रित किया गया है। यह अयूब के दो बच्चों की माँ है। उसके संबंध में नाटककार मोहन राकेश ने रंग-संकेत में लिखा है - सलमा दरम्यानी कद की महिला है। रंग गेंहुआ है। बड़ी-बड़ी आँखों के अलावा भी चेहरे को अपना आकर्षण है। हल्के रंग की साड़ी उसके शरीर पर बहुत फबती है। देखने में दुबली नहीं है, पर भारी भी नहीं कहा जा सकता। उम्र बाईस और तेईस के बीच है। चेहरे पर स्वाभाविक सौम्यता के अलावा विषाद की भी हल्की छाया है।[1] उसके चेहरे पर छाया यह विषाद उसके पति अयूब की देन है। क्योंकि वह उसको विवाह-पूर्व के डॉक्टर के साथ प्रेम-संबंध को लेकर बार-बार ताने-बाने उलाहने भरते रहता है, जिससे वह तंग आयी है। अयूब के इन तानों ने उसे खुदकुशी के कगार पर लाकर छोड़

* **डॉ. काकानि श्रीकृष्ण**, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, नागार्जुन नगर.

दिया है। चूँकि उसे अयूब से पिंड छुड़ाने का यही रास्ता नज़र आता है।

सलमा का विवाह से पूर्व एक डॉक्टर से प्रेम-संबंध रहा है। वह उनके बचपन का भी साथी है। सलमा के इस प्रेम-संबंध से अयूब परिचित है। परिणामस्वरूप वह सलमा के साथ सहज नहीं रह पाता। नतीजा दोनों में कटुता छाई हुई है। उनके इस कटु संबंध के बारे में वह पंडित से कहता है, कुछ रिश्ते खराब हैं। मेरे और मेरी बीवी के----हमें कुछ गहरी बातें डॉक्टर से करती थी। डॉक्टर मेरी बीवी का बचपन का दोस्त हैं।[2] वह सलमा को डॉक्टर से रूबरू कर उन दोनों के चेहरे की प्रतिक्रियाएँ देखना चाहता था। किन्तु उसकी यह कुटिलता डॉक्टर के क्लब में न आने से असफल हो जाती है। वह सलमा को उसके इस प्रेम-संबंध से निरन्तर प्रवंचित करते रहता है। परंतु दूसरी ओर स्वयं वह भी तो दूध का धुला नहीं है। इसका अहसास सलमा उसे दिलाती है - मुझे तुम हमेशा चेहरों को लेकर शर्मिंदा कर सकते हो----खुद भी अगर शर्मिंदा हो सकते तो शायद हम दूसरे के चेहरों को ज्यादा पहचान पाते तुमने कल यहाँ उस लड़की रीता के साथ जो कुछ करने की कोशिश की----वह भी तो एक चेहरा उसके लिए भी तुम शर्मिंदा नहीं हो सकते।[3] सलमा विवाह के पश्चात् अयूब को खुश रखने का बहुत प्रयास करती है। उसे हर प्रकार से प्रसन्न रखना चाहती है। किन्तु अयूब न उससे सुखी हो पाता है और न ही उसे सुख दे पाता है। उसका यह कथन इसका प्रमाण है - यह सलमा वह और वह चाहती थी। पर इसे यह और वह ज़िन्दगी और मुझसे नहीं मिला। मैं यह, यह और वह चाहता था। पर मुझे यह और वह ज़िन्दगी और इससे मिला नहीं।[4] इसका परिणामस्वरूप दोनों का जीवन कुंठित हो गया है।

सलमा पति-धर्मा नारी है। उसे चरित्र का यह पहलू उस समय उजागर होता है, जब बाढ़ की वजह से उनको रात भर क्लब में रुकना पड़ता है। उस समय अयूब नियामत से भोजन के बारे में पूछता हुआ यह कहता है कि कुछ है यहाँ? आखिर रात तो काटनी ही है।[5] उसके मुख से निकला यह वाक्य पत्नी सलमा के लिए उसको भूख लगने का संकेत है, जिसे सुनकर वह तत्काल ही उसके भोजन की व्यवस्था करने के लिए क्लब के किचन में जाकर भोजन बनाती है। सलमा को अपने पति का ख्याल है और पत्नी होने के नाते पत्नी के कर्तव्य का भी ज्ञान है। विवाह के पश्चात् वह अपने पूर्व प्रेमी डॉक्टर एवं उसके प्रेम को भूलकर, सर्वस्व अयूब के प्रति समर्पित होती है। परंतु अयूब उसकी अवहेलना कर उसे हताश कर देता है। नतीजा वह कब्रिस्तान बन जाती है। अयूब पंडित से कहता है- क्या तुम सोच सकते हो कि मियाँ-बीवी के रिश्तों के बीच अगर कोई छाया भी आ जाए, तो क्या हो सकता है गलत मत समझना----मेरी बीवी की ज़िन्दगी में और कोई नहीं है, पर मेरे लिए वह एक कब्रिस्तान बन गई है----औरत कब्रिस्तान क्यों बन जाती है?[6] अयूब के इस प्रश्न का उत्तर तिलकराज शर्मा ने देते हुए लिखा है, इसके लिए सभी के अलग-अलग कारण हो सकते हैं। एक कारण आदमी और औरत में उत्पन्न होनेवाला संशय का भाव और तब उसके बारे में शिद्दत से सोचने का भाव भी हो सकता है। तब आदमी

का टूटना गिलास का टूटना एक जैसा बन जाता है और अयूब के लिए सलमा का अस्तित्व कुछ इसी प्रकार का बनकर रह गया है।[7] सलमा को अयूब की यह नीरसता खलती है साथ ही कितना कुछ माँगा है, मगर हर बार तुम्हारी माँग स्वीकार लेने का कुछ भी फल नहीं मिला।[8] फलतः वह अयूब से ऊबी हुई है। यद्यपि बाढ़ के रूप में क्लब में आयी अनचाही मौत के समय वह अयूब का साथ चाहती है इस अनचाही मौत के वक़्त तुम मेरे पास रहे----मैं तुमसे सिर्फ़ इतना ही चाहती हूँ सिर्फ़ इतना हो-----।[9] सलमा भावनाशील एवं भारतीय नारी है। उसने विवाह से पूर्व भले ही डॉक्टर से प्रेम किया होगा, परंतु विवाह के पश्चात् वह अयूब को ही अपना सर्वस्व मानती है। चूँकि मृत्यु के समय वह अपने पति का अपने पास होना आवश्यक समझती है।

सलमा के मन में अयूब के प्रति क्रोध और घृणा है। इसी वजह से वह अयूब के नीरा को पकड़ने की कोशिश करने पर उस पर झपटती हुई उससे कहती है - मैं सोचती भी नहीं थी कि तुम इतने नकारा हो सकते हो----अगर तुमने कुछ भी कोशिश की तो----। बदज़ात नकारा---इसे छोड़ दें, नहीं तो खून हो जाएगा[10] और वह उसे आग बरसती आँखों से देखती रह जाती है।

उसे अपने पति की आवारगी की पूरी जानकारी है। फिर भी वह उससे कुछ नहीं कहती है। क्लब में भोजन के समय सभी लोग टेबल पर आ जाते हैं। परंतु अयूब रीता को प्राप्त करने उसके पीछे पड़ा हुआ रहता है, जिसकी जानकारी स्वयं उसे है। चूँकि वह पंडित से अयूब के बारे में पूछने पर केवल इतना ही कहती है- आप लोग खाना खाइए। जो कहीं हैं वे भी आ जाएँगे अभी।[11] यहाँ पर सलमा नारी के सहनशील एवं पारंपरिक पत्नी रूप को उजागर करती है, जो अपने पति की गलतियों को भी शिरोधार्य लेती है।

वह उपेक्षित नारी-रूप में भी चित्रित हुई है। पैर तले की ज़मीन नाटक में अयूब द्वारा उसकी होनेवाली हर दम उपेक्षा सर्वत्र दिखाई देती है। क्लब के पोर्टिको में बेहोश-सी पड़ने पर अयूब उसे वहीं छोड़कर आराम से क्लब के अन्दर आ जाता है। वही नहीं तो वह अब्दुल्ला से इत्मीनान से वह कहता है कि इस तरह घबराने की ज़रूरत नहीं। बाहर नियामत उसकी देखभाल कर रहा है।[12] यद्यपि नियामत की जगह उसे रहना चाहिए था, परंतु वह उसकी उपेक्षा करने से, उसे उसी तरह छोड़ देता है। नाटक में अन्य एक जगह पर सलमा, अयूब की उसके प्रति उपेक्षा को इस प्रकार से प्रकट करती है- उन्हें सबसे कुछ न कुछ चाहिए। किसी से कुछ लेना है, किसी को कुछ देना। सिर्फ़ मुझसे ही उन्हें कुछ नहीं चाहिए।[13] सलमा अयूब की उपेक्षित पत्नी है।

पैर तले की ज़मीन नाटक में सलमा का चरित्र हताश पत्नी, पति-धर्मा नारी, प्रेमिका, भावनाशील, क्रोध, ऊबी हुई एवं घृणा करनेवाली नारी, सहनशील, पारंपरिक भारतीय नारी एवं पत्नी तथा उपेक्षिता आदि कई रूपों में चित्रित हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 63
2. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 41
3. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 68
4. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 110
5. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 73
6. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 45
7. तिलकराज शर्मा, अपने नाटकों के दायरे में, मोहन राकेश, पृ. सं. 142
8. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 101
9. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 88
10. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 86
11. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 78
12. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 44
13. मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, पृ. सं. 85